मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
आरो एक श्रेष्ठ भाइ हैब बैमातर। इरार तनय कुबेर धनेश्वर॥ बिष्णु भक्त हैबंत कुबेर बिभीषण। हैब दुष्ट दुर्ज्जन रावण कुंभकर्ण॥126	विमाता से और एक श्रेष्ठ भाई होगा। धनेश्वर कुबेर इरा का पुत्र होगा॥ विष्णु भक्त कुबेर और है विभीषण। दुष्ट दुर्जन रावण और कुंभकर्ण॥126
रावणर हैब आरो भागिनी दुतय। त्रिजटा हैबेक बिष्णुभक्त आतिशय॥ शूर्पणखा हैब आति परम पापिनी। धर्म्माधर्म्म नाजानिब सिटो राक्षसिनी॥127	राजा रावण की और दो भगिनी होंगी। त्रिजटा तो अतिशय विष्णुभक्त होगी। शूर्पनखा होगी अति परम पापिनी। धर्माधर्म ज्ञान न रखेगी राक्षसिनी॥127
बिश्वकर्म्मे नाना चित्र करिब लंकात। दुति अम्रावती येन देखिब साक्षात॥ ताते राज्य करिबा कुबेर धनेश्वर। हैब लोकपाल राजा यक्षर उपर॥128	विश्वकर्मा लंका को करे देंगे चित्रित। साक्षात दूसरी अमरावती विचित्र॥ वहीं राज्य करेगा कुबेर धनेश्वर। होगा लोकपाल राजा यक्षों के ऊपर॥128
सूवर्णर पुरि लंका रत्ने जातिष्कार। नाना चित्र बिचित्र प्रकाशे घर द्वार॥ नाना उपबने फले फुले समन्वित। भुंजन्त कुबेर बहु भोग मनोनीत॥129	सुवर्णपुरी लंका रत्नों से जातिष्कार। विचित्र चित्रों से सुसज्जित घर-द्वार॥ नाना उपवन फल फूल समन्वित। भोगेगा कुबेर नाना भोग मनोनीत॥129
तप करि रावणे ब्रह्मात बर पाइ। कुबेरर पाशे दूत दिबेक पठाइ॥ लंकापुरी कुबेरे आमाक देउक छारि। सुखे येवे नेदय आपुनि लैबो काढ़ि॥130	तप से रावण को ब्रह्मा वर मिलेगा। कुबेर के पास वह दूत भेज देगा॥ कुबेर लंकापुरी हमारे लिए छोडें। इच्छा से नहीं देते तो स्वयं हम छीनें॥130
दूते एहि कथा कैब कुबेरर आगे। नकरिबा बिबाद कुबेर महाभागे॥ दैत्य अंश रावणर बिबादत रति। बिष्णु अंशे कुबेरर बिष्णुत भकति॥131	दूत बात जाकर कुबेर से कहेगा। भाग्यवान कुबेर विवाद न करेगा॥ दैत्य अंश रावण का विवाद है रति। विष्णु के अंश कुबेर की विष्णु में भक्ति॥131
एतेके बिबाद नकरिया धनपति। पठाइबा मधुर बुलि रावणक प्रति॥ लंकापुरी राज्य तेजि दिबा रावणक।	इसीलिए विवाद न कर धनपति। रावण के लिए भेजेगा वाणी संप्रीति॥ लंकापुरी वह रावण को त्याग देगा।

यक्षगण समे चलि याइबा कैलासक॥132

अलकावती नामे एक पातिया नगर।
तथाते रहिबा सुखे धनर ईश्वर॥
लंकात हैबेक राजा दुर्ज्जय रावण।
त्रिदश देवक हिंसा करिब दुर्ज्जन॥133

बिश्श्वजिसु नामे दैत्य कुले हैब जात।
शूर्पणखा भगिनीक बिहा दिब तात॥
रावणे करिब बिहा कन्या मन्दोदरी॥
मयदानवर जीउ परमा सुंदरी॥134

रावणर पुत्र हैब नामे इंद्रजित।
देवे नपारिव तार प्रताप सहित॥
रथत चड़िया य़ाइब स्वर्गक रावण।
इंद्रर नंदन बन करिब उछन॥135

देखिया इंद्रर महामर्म्मे दहे मन।
कुबेरक हाते धरि देखावंत बन॥
बासवर बचने कुबेर बुद्धिमन्त।
रावणर ठाइ दूत पठाइ दिबंत॥136

प्रबोध बचन बुलि पठाइबा बहुत।
रावणर आगे ताक कहिबेक दूत॥
शुनि महाकोपे झंकारिया दश माथ।
कुबेरर दूतक काटिब लंकानाथ॥137

रथे चड़ि साजि धाया याइबा लंकेश्वर।
यक्ष राक्षसर घोर मिलिब समर।
कुबेर रावणे रण हैब भयंकर॥
करिब समर तिनि सहस्त्र बत्सर॥ 138

ब्रह्मार बरत भैला रावण दुर्ज्जय।
तारार बिक्रम कार शकति सहय ॥
कुबेरक जिनि लैब पुष्पक बिमान।
सेनासमे चड़ि ताते करिब पयाण॥ 139

यक्षों के साथ कुबेर कैलाश चलेगा॥132

अलकावती नाम से बसाया नगर।
वहीं रहेगा सुख से धन का ईश्वर॥
लंकापूरी में राजा दुर्जेय हो रावण।
त्रिदस देवों को हिंसा करेगा दुर्जन॥132

विश्वजिसु नाम के दैत्य का जन्म होगा।
भग्नि शूर्पनखा का ब्याह उससे होगा॥
दशानन करेगा विवाह मंदोदरी॥
मयदानव की पुत्री परम सुंदरी॥134

इंद्रजित नाम से रावण पुत्र होगा।
देवों से उसका प्रताप सह्य न होगा॥
रथ पर चढ़कर स्वर्ग जायेगा रावण।
इंद्र का नन्दन वन करेगा उछन॥135

दुख से दहन होगा देवेंद्र का मन।
कुबेर को लाकर दिखायेंगे वन॥
बुद्धिमान कुबेर इन्द्र के वचन से।
संदेश भेजता है रावण को दूत से॥136

भेजेगा कह अनेक वचन प्रबोध।
रावण के आगे जाकर कहेगा दूत॥
सुन झटकारेगा रावण दस माथ।
कुबेर के दूत को काटेगा लंकानाथ॥137

रथ पर चढ़ चला सज लंकेश्वर।
यक्ष राक्षस में छिड़ेगा महासमर॥
कुबेर से रावण महारण करेगा।
तीन हज़ार वर्षों तक रण चलेगा॥ 138

ब्रह्मा के वर से दुर्जेय महा रावण।
उसके विक्रम के सामने सब हीन ॥
कुबेर को जीत लेगा पुष्पक विमान।
सेना संग चढ़कर करेगा प्रयाण॥ 139

महाबलवंत रावणर सेनागण।
युद्धे जिनि बश्य करिबेक त्रिभुवन॥
यैते यैते महायज्ञ शुनय रावण।
लुरि पुरि खाया दाया करय उछन॥140
सुंदरी कन्यार कथा शुने यतमान।
बले हरि आनिबेक आपुनार थान॥
अनेक प्रहार करि संग्रामर माज।
करिबेक बिकर्थना जिनि देवराज॥141

महा शक्तिशाली रावण का सेनागण।
युद्ध जीत वश करे लेगा त्रिभुवन॥
जहाँ जहाँ महायज्ञ सुनेगा रावण।
लुटपाट खा पीकर करेगा उछन॥140
सुंदर कन्या की कथा जितना सुनेगा।
बल से हरण अपना स्थान लायेगा॥
अनेक प्रहार करेगा रण में वह।
निंदा करेगा वह देवेंद्र लेंगे सह॥ 141

संजमणि गैया बीर रावण प्रचंड।
यम जिनि काढ़िया लैबेक यमदंड॥
चंद्रक जिनिया तान हरिबे प्रकाश।
बरुणक जिनि तान लैब नागपाश॥142

संयमिनी में जाकर रावण प्रचंड।
यम जीतकर छीन लेगा यमदंड॥
चन्द्र को जीत हरण करेगा प्रकाश।
वरुण को जीतकर लेगा नागपाश॥142

तबे षड़ऋतु सब हैब बिपर्यय।
नवग्रह सबार खंडाब भाग्यचय॥
करिब अधीन जिनि दैत्य दानवक।
युद्धे जिनि मन्द तेज करिब सूर्यक॥143

षड़ऋतु में होगा सबका विपर्यय।
नवग्रह खंडन करेगा भाग्यचय॥
दैत्य दानव को जीत अपना अधीन।
युद्ध जीत सूर्य का करेगा तेज क्षीण॥143

अपेस्वरा गंधब्र्बो सेविब निरंतर।
भये मंदगति आति हैब पवनर॥
समस्ते देवरे खंडाइबेक अधिकार।
शुक्रुक देखिया किछु करिब सत्कार॥144

प्रत्येक क्षण सेवा में अप्सरा गंधर्व।
भय से पवन की गति पड़ेगी मंद॥
देवों का खंडन कर देगा अधिकार।
शुक्र को केवल कुछ करेगा सत्कार॥144

नकरिब जगतक इंगित दुर्म्मति।
आपुनि हैबेक त्रिभुवन अधिपति॥
समस्तके रावणे लगाया अपमान।
रामर हातत हैब सबंशे निर्याण॥145

जगत की चिंता नहीं करेगा दुर्मति।
स्वयं बनेगा त्रिभुवन का अधिपति॥
रावण से सबको मिलेगा अपमान।
राम के हाथों वंश का होगा निर्याण॥145

संक्षेपे कहिलो कथा राम रावणर।
प्रपंचिया रामायण करा मुनिबर॥
बाल्मीकिक एतेक बुलिया देवऋषि।
हरिगुण गाय चलि गैलंत हरिषि॥146

संक्षेप कही कथा राम और रावण।
मुनिवर विस्तार से करें रामायण॥
वाल्मीकि से यह कहते हुए देवर्षि।
चले हरिगुण गाकर हर्षित ऋषि॥146

बाल्मीकिओ रामर चरित्र शुनि काणे।
भैलंत तृपिति येन अमृतक पाने॥
रामायण करिबाक भैला तान मति।
एकचित्ते मुनि सुमरिला सरस्वती॥147

सुप्रसन्न हुया देवी भैलंत साक्षात।
देखिया बाल्मीकि करिलंत प्रणिपात॥
ब्रह्मार आज्ञाये आमि करो रामायण।
आमार कंठत माव हुयोक प्रसन्न॥148

बुलिलंत सरस्वती मुनिक बचन।
थाकिबोहो आमि तयु कंठे सर्ब्बक्षण॥
तोमार बचनचय नुहिबे अन्यथा।
करा सावधाने राम अवतार कथा॥
निस्तरोक लोक शुनि रामर चरित।
एहि बुलि सरस्वती भैला अंतर्हित॥149

सूर्यबंशर बिवरण

अनंतरे हरिषे बाल्मीकि तपोधन।
रामक सुमरि आति भैला शुद्धमन॥
शुभक्षणे बसिला करिते रामायण।
आचरिला सुमंगल हरिर कीर्तन॥150

वाल्मीकि राम का चरित्र सुन कानों से।
अमृत की तृप्ति राम कथा के पान से॥
रामायण की हुई उनकी महा मति।
एकाग्र हो स्मरण करते सरस्वती॥147

देवी सुप्रसन्न होकर हुईं साक्षात।
देखकर वाल्मीकि ने किया प्रणिपात॥
ब्रह्मा की आज्ञा से करता हूँ रामायण।
मेरे कंठ में माता हो जाएँ सुप्रसन्न॥148

बोल पड़ी सरस्वती मुनि से वचन।
रहूँगी तुम्हारे कंठ में मैं सर्वक्षण॥
तुम्हारे वचन नहीं होंगे यूँ अन्यथा।
करो सचेत हो राम अवतार कथा॥
उद्धार हों सुनकर राम का चरित्र।
कहकर सरस्वती हुईं अंतर्हित॥149

सूर्य वंश का वर्णन

उसके बाद आनंदित हो तपोधन।
राम का स्मरण कर हुए शुद्धमन॥
शुभक्षण बैठते करने रामायण।
आचरण से सुमंगल हरि कीर्तन॥150